दिनांक :- 14-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम : डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक : प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- छः

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत –

इस काल में श्रेणियों को राज्य की तरफ से पर्याप्त स्वतंत्रता दी गई थी। श्रेणियों की अपनी पृथक सभा होती थी। श्रेणियाँ बैंक के रूप में भी कार्य करती थी। वे वस्तुओं के नाप तौल एवं मूल्य निर्धारण तथा मजदूरी निर्धारण भी करती थी। श्रेणियों की अपनी सेना भी होती थी. जो कड़वा के साथ उसकी सुरक्षा के लिए चलती थी। श्रेणियों की अपनी निजी

सदस्यों पर गहरी पकड़ थी। तथा इसके लिए उसे राज्य की तरफ से मान्यता भी मिलती थी।

- श्रेणियाँ अपने भ्रष्ट सदस्यों का निष्कषण कर सकती थी

किसी भी स्त्री को बौद्ध संघ या जैन संघ की सदस्यता के लिये उसे अपने पति के अतिरिक्त पति के संघ से भी अनुमति लेनी पड़ती थी।

विभिन्न श्रेणियों में मद्य भंडागारिक नामक अधिकारी एकता स्थापित करता था।

बड़े नगरों में बड़ी श्रेणियाँ थी। जिनके प्रधान को महाश्रेष्ठि कहा जाता था। श्रावस्ती का महाश्रेष्ठि अनाथपिंडक तथा कौशाम्बी के व्यापारियों का महाश्रेष्ठि घोषक था। इन महाश्रेष्ठियों कहा जाता है। इन महाश्रेष्ठियों में विभिन्न अलौकिक धार्मिक संगठनों को अनुदान देने में प्रर्याप्त उदारता दिखलाई जैसे- अनाथपिंडक ने जेतवन नामक बौद्ध विहार तथा घोषित ने घोषितराम विहार का निर्माण करवाया।

व्यापार वाणिज्य –

शिल्प तथा उद्योगों के विकास ने व्यापारिक वस्तुओं के आयात-निर्यात को बढ़ावा दिया। इस काल में व्यापार-स्थल तथा जल दोनों मार्गों में होता है।

जातक में 500 मे 1000 गड़ियों के साथ माल लेकर चलने वाले व्यापारियों के कारवाँ उल्लेख है।

कारवाँ (व्यापारिक-काफिला) सितारों तथा कौर की सहायता से थलनिय्याम के नेतृत्व में चलता था।

काफिलो में चलने वाले व्यापारी सार्थवाह कहलाते थे तथा वे एक मुखिया जिसे सार्थवाहजेष्ठक (प्रमुख) कहा जाता था, के नेतृत्व में दूर-दूर तक यात्रा करते थे।

प्रमुख व्यापारिक मार्ग –

एक मार्ग जो दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की तरफ जाता था, प्रतिष्ठान (पैठान) को माहिष्मति उज्जैन, विदिशा और कौशाम्बी होते थे साकेत को जोड़ता था।

दूसरा मार्ग जो दक्षिण पश्चिम ताम्रलिप्ति से पाटलिपुत्र एवं श्रावस्ती के माध्यम से उज्जैन होते हुए भड़ौंच को जोड़ता था। तीसरा मार्ग मथुरा, राजस्थान तथा तक्षशिला से जुड़ा था।

सुत्तनिपात के अनुसार दक्षिण तथा पश्चिम के व्यापारिक मार्ग कौशाम्बी में मिलते थे।

प्रमुख बंदरगाह —

भारूकच्छ (भृगुकच्छ, भड़ौंच) सोपरा (पश्चिमी तट) ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट)

व्यापार की प्रमुख वस्तुएं, रेशम, मलमल अस्त्र शस्त्र कालीन, आभूषण तथा हाथी दाँत के उपकरण होते थे

अधिकतर नदी मार्ग से व्यापार चंपा (अंग) से वाराणसी तक का होता था।

व्यापार की वृद्धि के लिये पण्य सिद्धि संस्कार किया जाता था। इसमें सोम की पूजा होती थी।

इस समय ऋण का ब्याज की प्रणाली भी प्रचलित थी जो 1-1/4 प्रतिशत प्रति मास तथा 15 प्रतिशत वार्षिक की

होती थी। व्यापारियों को आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही प्रकार के व्यापारिक माल पर चुंगी कर देना पड़ता था जो 1/20 आंतरिक तथा 1/10 बाह्य व्यापार पर होता था।

विनिमय का साधन

इस काल में विनिमय के साधन के रूप में सिक्कों का प्रचलन होने लगा था परन्तु यह वस्तु विनिमय के साथ ही प्रचलित था। इस समय वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिये कार्षापण (कहापण) नामक सिक्के का प्रयोग होता था। यह चाँदी तथा ताँबे का हो सकता था। इस पर व्यापारी या शिल्पी संघ की छाप होती थी।

नगरों का विकास —

छठी शताब्दी ईसा पूर्व को द्वितीय नगरीकरण का काल माना जाता था क्योंकि हड़प्पा सभ्यता के पश्चात सर्वप्रथम इसी काल में ही साहित्यिक स्रोतों में वृहद नगरों की सूचना मिलती है। तैतरीय आरण्यक में पहली बार नगर की चर्चा की गई है। यह ग्रंथ सातवीं ईसा पूर्व से छठी सदी ईसा पूर्व

के मध्य रचित हुआ।

इस काल में 60 नगरों की चर्चा की चर्चा की गई है जिनमें श्रावस्ती ,राजगृह चंपा, तक्षशीला, वाराणसी जैसे 20 बड़े नगर थे।

बुद्धकाल में पाटलिपुत्र का उल्लेख नगर के रूप में नहीं बल्कि ग्राम के रूप में ही हुआ है।

बौद्ध साहित्य में 6 महानगरों का संदर्भ आता है जैसे : राजगृह चंपा, काशी श्रावस्ती, साकेत तथा कौशाम्बी इनमें से अधिकतर मध्य गंगा घाटी के उपजाऊ मैदानों में स्थित थे।

समाज

इस काल से चतुर्वर्ण व्यवस्था में कठोरता के लक्षण दिखने लगे।

ऋग्वेद में विराट पुरुष के चार अंगों से चारों की उत्पत्ति मानी गई है।

महाभारत में विराट पुरुष के स्थान पर ब्रह्मा को इस उत्पत्ति का श्रेय दिया गया है।

मनुस्मृति में भी ब्रह्मा के चार अंगों से चारों वर्णों की उत्पत्ति मानी गई है।

पुराण में विष्णु के चार अंगों से वर्णों की उत्पत्ति मानी गई है।

गीता में कृष्ण ने बताया है कि चारों वर्णों की उत्पत्ति

गुण तथा कर्म के आधार पर की गई है।

सर्वप्रथम सूत्रकाल में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म के स्थान पर जन्म को माना गया तथा राजा को सलाह दी गई कि वह वर्णात्मिक व्यवस्था की रक्षा करे। वर्ण के अनुसार दण्ड की पृथक व्यवस्था की जाने लगी।

ब्राह्मण :

यज्ञ की प्रतिष्ठा के साथ समाज में ब्राह्मणों का स्थान श्रेष्ठ हो गया। महात्मा बुद्ध ने ब्राह्मणों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

① ब्रह्म समां (ब्रह्मा के समान)
② देव समां (देवताओं के समान)
③ मरियादा (अपने जातीय गौरव को पालन करने वाला)
④ संभिन्न मरियादा (जातीय गौरव से च्युत ब्राह्मण)
⑤ ब्राह्मण चाण्डाल (चण्डाल के समान आचरण वाला ब्राह्मण)

जातक कथाओं में ब्राह्मण की दो श्रेणियों का उल्लेख हुआ है: वास्तविक ब्राह्मण तथा सांसारिक ब्राह्मण। इनमें सांसारिक ब्राह्मण कृषिकर्म तथा पशुपालन में भी संलग्न रहते थे। इस समय ब्राह्मण के छः प्रधान कर्मों का उल्लेख मिलता है।